विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – सप्तम **दिनांक -२९ -०५- २०२१**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज पाठ -६ पुष्प की अभिलाषा नामक शीर्षक के बारे में अध्ययन करेंगे।

चाह नहीं, मैं सुरबाला के,
गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं प्रेमी-माला में,
बिंध प्यारी को ललचाऊँ,
चाह नहीं सम्राटों के शव,
पर हे हरि डाला जाऊँ,
चाह नहीं देवों के सिर पर,
चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ,
मुझे तोड़ लेना बनमाली,
उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृ-भूमि पर शीश- चढ़ाने,
जिस पथ पर जावें वीर अनेक।
(***कवि- माखनलाल चतुर्वेदी***)

अर्थ

कवि माखनलाल चतुर्वेदी जी पुष्प या फूल के रूप मे कहते हैं की मुझे कोई चाह नहीं है की मैं किसी स्त्री के गहनों में गूँथ जाऊं, मुझे कोई इच्छा नहीं है की मैं किसी महिला के बालों का गजरा बनूँ।

मुझे कोई इच्छा नहीं की मैं किसी प्रेमी युगलों का माला बनूँ। मुझे इसकी बिलकुल चाह नहीं है की मैं फूल बनकर किसी राजा या सम्राट के शव पर चढ़ाया जाऊं।

मुझे इसकी भी इच्छा नहीं है की मुझे भगवान के मस्तक पर अर्पित किया जाय जिससे मुझे अपने भाग्य पर गर्व हो।

मैं सिर्फ इतना चाहता हूँ की हे वनमाली तुम मुझे तोड़कर उस मार्ग पर फ़ेक देना जिस मार्ग पर वीर **देशभक्त**, शूरवीर इस भूमि की रक्षा के लिए अपने आप को अर्पण करने जाते हों ,जो इस भूमि के लिए अपना शीष अर्पण करने जाते हों।